MT

Seat No. | | | | | | | |

2018 1100

MT - HINDI (COMPOSITE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - III

Time : 2 Hours **Preliminary Model Answer Paper** **Max. Marks : 50**

विभाग 1 - गद्य

उ. 1 (क) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **निम्नलिखित विधान सही करके लिखिए।** **1**

(I) एक बार सेठानी बीमार हो गईं।

(II) हारकर सेठ साधु से मिलने गया।

(ii) **गद्यांश पढ़कर ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -** **1**

(I) अविश्वास से कौन हँस पड़ा ?

(II) कौन बीमार हो गई ?

(2) (i) **गद्यांश में से शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(I) कभी-कभी (II) वैद्य-डॉक्टर

(ii) **वचन बदलिए।** **1**

(I) सेठानी - सेठानियाँ (II) पेशा - पेशे

(3) आज का युग विज्ञान एवं तकनीकी का युग है। आज हमारे समाज में साधु और तांत्रिक के वेश में कुछ ढोंगी भी देखने को मिलते हैं। वे दूसरे की अज्ञानता और सीधेपन का लाभ उठाकर पैसा कमाते हैं। ऐसे में यदि घर का कोई व्यक्ति बीमार हो जाए, तो उसे साधु या तांत्रिक के पास ले जाना उचित नहीं है। फिर भी लोग अंधविश्वास के कारण बीमार व्यक्ति को साधु महाराज के पास लेकर जाते हैं। साधु के पास कोई भी ऐसी अद्‌भुत शक्ति नहीं होती है। वह तो सिर्फ उसके पास आने वाले व्यक्ति को आशीर्वाद दे सकता है और ईश्वर से उनके कष्ट हरने की प्रार्थना कर सकता है। इससे ज्यादा उसके हाथ में कुछ नहीं होता है। फिर भी लोग उस पर विश्वास रखते हैं। हमें समाज में चारों ओर फैले कुछ ढोंगी साधुओं से बचना चाहिए और बीमार व्यक्ति को डॉक्टर के पास लेकर जाना चाहिए तथा डॉक्टर से उसका इलाज करवाना चाहिए। **2**

उ. 1 (ख) निम्नलिखित पठित गद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

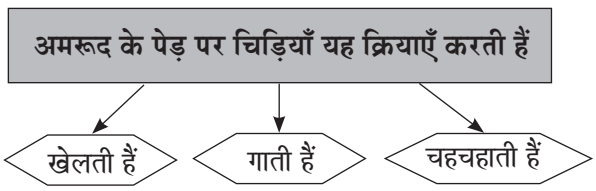

(ii) **निम्नलिखित गलत विधान सही करके लिखिए।** **1**

(I) लेखक ने अमरूद के पेड़ की उपेक्षा नहीं की।

(II) वसंत के आते ही अमरूद की विरल डालियाँ नई पत्तियों और टहनियों से सघन होने लगती हैं।

(2) (i) **निम्नलिखित शब्द में उचित उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर नए शब्द तैयार कीजिए।** **1**

(I) **उपसर्गयुक्त शब्द** : सफल

प्रत्ययुक्त शब्द : फलहीन

(ii) **गद्यांश में से शब्द-युग्म ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(I) धीरे-धीरे (II) छोटे-छोटे

(3) भारतीयों की जीवन पद्धति में फूलों और फलों का अत्यधिक महत्त्व है। फल-फूल मनुष्य की भावनात्मक सुंदरताओं के प्रतीक माने जाते हैं। व्यक्ति के जीवन में मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से भी फूलों और फलों का अत्यधिक महत्त्व है। फल-फूलों को ईश्वर को समर्पित किया जाता है। अत: आध्यात्मिक दृष्टि से भी इनका अनन्यसाधारण महत्त्व है। फूलों के बीच जाने से दुखी व्यक्ति के जीवन में उत्साह भर हो जाता है। फूल मनुष्य को मानसिक शांति और आरोग्य प्रदान करते हैं। जहाँ पर फूल-फल के पेड़-पौधे होते हैं, वहाँ पर तरह-तरह के पक्षी होते हैं। उनका कलरव सुनकर मनुष्य अपने आपको प्रकृति से जुड़ा हुआ पाता है। प्रकृति से जुड़े रहना मनुष्य के मन और शरीर को सुकून प्रदान करता है। अत: हमें फल-फूल वाले पेड़-पौधे उगाने चाहिए। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ. 2 (अ) निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।

(1) (i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

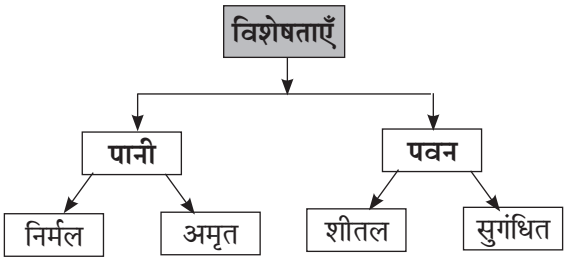

(ii) **समझकर लिखिए।** **1**

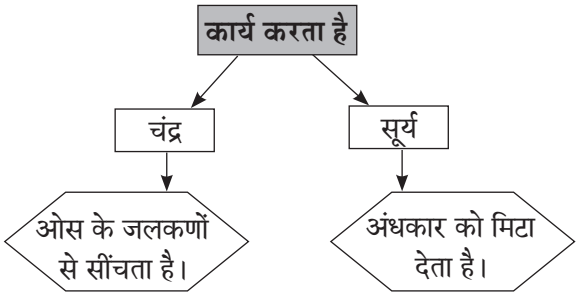

(2) **उपसर्ग व प्रत्यय लगाकर नए शब्द तैयार कीजिए।** **1**

(i) उपसर्गयुक्त शब्द : सुगंध, प्रत्ययुक्त शब्द : सुगंधित

(3) भारत भूमि पर प्रकृति की विशेष कृपा है। विश्व में हमारी ही मातृभूमि ऐसी है जहाँ पर छ: ऋतुओं का नियमित रूप से आगमन होता है। सभी ऋतुओं में अनोखी छटा देखने को मिलती है। वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत व शिशिर इन छ: ऋतुओं के एक-के-बाद एक अद्भुत दृश्य देखने को मिलते हैं। वसंत में फूलों का खिलना व पौधों का हरा-भरा होना आदि दृश्यों से मातृभूमि की शोभा देखने लायक होती है। ग्रीष्म ऋतु में फल व मेवे पकते हैं। बागों में आमों के फल लगते हैं। वर्षा ऋतु में बारिश होती है। फसलों के लिए पानी मिलता है। पेड़ पौधे खुश और हरे-भरे हो जाते हैं। शरद ऋतु में कास के फूलों से धरती सज उठती है। मौसम सुहावना हो जाता है। हेमंत में बीज अंकुरित होते हैं। ओस की बूँदें गिरने लगती हैं। शिशिर में कड़ाके की ठंड पड़ती है। घना कोहरा छा जाता है। इस प्रकार मातृभूमि पर छ: ऋतुएँ सदैव अपना-अपना सौंदर्य बिखेरती रहती हैं। **2**

उ. 2	**(आ)निम्नलिखित पठित पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
(1)	(i) **संजाल पूर्ण कीजिए।**	**1**

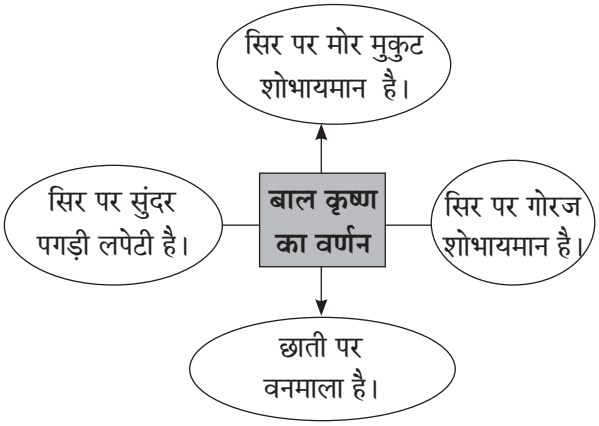

	(ii) **निम्नलिखित शब्द पढ़कर ऐसे दो प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्न शब्द हों -** (I) कौन पुकार कर हँस रहे थे ? (II) कवि की आँखों में किसकी छबि बस गई है ?	**1**
(2)	**निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए।** (i) भाल - मस्तक (ii) हिय - हृदय	**1**
(3)	बाल कृष्ण भगवान कृष्ण का बचपन का रूप था, जो मोहक एवं सभी को अपनी ओर आकर्षित करता था। मैंने कई बार बाल कृष्ण की छबि देखी है। इतना ही नहीं, मैंने दूरदर्शन पर कई धारावाहिक भी देखे हैं; जिसमें कृष्ण के बालरूप को बड़े ही मनोहारी एवं आकर्षक रूप में दर्शाया गया है। बाल कृष्ण के सुंदर व मुग्ध रूप को देखकर मैं आनंदविभोर हो गया हूँ। कोमल, श्यामल रंग, हाथ में बाँसुरी लिए हुए वे बहुत आकर्षक लगते हैं। उनकी छबि दिव्य और बड़ी ही मोहक है।	**2**

विभाग 3 - व्याकरण विभाग

उ. 3	**सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए ।**	
(1)	**निम्नलिखित शब्दों का मानकवर्तनी के अनुसार शुद्ध शब्द छाँटकर कीजिए ।** (i) चिह्न (ii) इकट्ठा	**1**
(2)	**निम्नलिखित अव्यय शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए ।** (i) **परंतु** : मैं तुम्हें मिलने आने ही वाला था परंतु कुछ कारण वश नहीं आ सका।	**1**
(3)	(i) **सूचना के अनुसार काल परिवर्तन कीजिए।** किसी प्राकृतिक मनोरम दृश्य को देखना चाह रहा था।	**1**
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के काल पहचानकर लिखिए।** सामान्य भविष्यकाल	**1**
(4)	(i) **निम्नलिखित मुहावरे का अर्थ लिखकर सार्थक वाक्यों में प्रयोग कीजिए।** **बिना सिर-पैर की बातें करना** : निरर्थक बातें करना। **वाक्य** : जो कुछ भी बोल रहे हो उसका कुछ प्रमाण होना चाहिए अन्यथा **बिना सिर-पैर की बातें करने** से कुछ भी हासिल नहीं होगा।	**1**
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अधोरेखांकित शब्दसमूह के लिए कोष्ठक में दिए मुहावरों में से उचित मुहावरे का चयन करके वाक्य फिर से लिखिए।** सर्कस की गुड़ियों के करतब देखकर दर्शक **दंग रह गए।**	**1**

(5)	(i) **निम्नलिखित संधि विच्छेद की संधि कीजिए और भेद लिखिए।** सु + आगत - स्वागत = स्वर संधि	**1**
	(ii) **निम्नलिखित शब्दों का विच्छेद कीजिए और भेद संधि लिखिए।** यद्यपि - यदि + अपि = स्वर संधि	**1**
(6)	(i) **रचना की दृष्टि से वाक्य के प्रकार बताइए।** मिश्र वाक्य	**1**
	(ii) **निम्नलिखित वाक्यों के अर्थ के अनुसार भेद लिखिए।** प्रश्नार्थक वाक्य	**1**
	विभाग 4 - रचना विभाग	
उ. 4	**(अ)**	**4**
(i)	१० जुलाई, २०१८ प्रति, मा. महानगर अधिकारी, महानगरपालिका, दादर (पूर्व), मुंबई - ४०० ०४३. **विषय** : बच्चों के खेलने के लिए बगीचा बनवाने हेतु प्रार्थना पत्र। माननीय महोदय, मैं कुमार अजय मेहता दादर पूर्व विभाग का निवासी हूँ। मैं आपको यह प्रार्थना पत्र लिख रहा हूँ क्योंकि हमारे विभाग में बच्चों के खेलने के लिए बगीचा नहीं है। हमारे विभाग में कुल मिलाकर दो सौ से अधिक बच्चे हैं। उनके खेलने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। यहाँ हर इमारत के बीच में खेलने के लिए पर्याप्त जगह नहीं है। यहाँ मैदान भी नहीं है, जिस कारण बच्चों को खेलने-कूदने के लिए बहुत दिक्कत हो रही है। छुट्टियों में उनका ठीक से मनोरंजन नहीं हो पाने के कारण घर में बैठकर या तो टी. वी. देखते हैं या कंप्यूटर गेम खेलते हैं जिससे उनका शारीरिक विकास नहीं हो पा रहा है। आपसे नम्र निवेदन है कि आप हमारे विभाग में एक बगीचा का निर्माण करें ताकि विभाग में रहने वाले बच्चों के बाहर खेलने के लिए पर्याप्त जगह हो। मुझे आशा है कि आप मेरे प्रार्थना पत्र पर जरूर विचार करेंगे। कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी। धन्यवाद! भवदीय, अजय मेहता, ४०१, राम महल, राधा नगर, मुंबई - ४०० ०२६ ई-मेल आईडी : ajay56@gmail.com **अथवा**	
(ii)	१० जुलाई, २०१८ प्रिय मित्र राहुल, सप्रेम नमस्ते। तुम कैसे हो ? बहुत दिन हो गए लेकिन तुम्हारा पत्र नहीं मिला। आशा करता हूँ कि तुम ठीक होगे। मैं भी कुशल हूँ। मेरी चिंता मत करना।	**4**

राहुल, हमारे विद्यालय ने महाबलेश्वर की सैर आयोजित की थी। सैर तीन दिन की थी। दिनांक २५ जून को हम सुबह ७ बजे महाबलेश्वर की ओर निकले। करीबन शाम के ४ बजे तक हम महाबलेश्वर पहुँच गए थे। महाबलेश्वर के बारे में तुम्हें क्या बताऊँ? बहुत ही रम्य प्राकृतिक स्थल है महाबलेश्वर। वहाँ की वादियाँ एवं घाटियाँ देखकर मेरा मनमयूर नाचने लगा था। सघन वृक्ष देखने लायक थे। चारों ओर का वातावरण बड़ा ही शांत और खुशनुमा था। हवा में ठंडक व ता. जगी थी। पेड़ों पर उछल-कूद करने वाले बंदरों की सेना देखकर मैं आनंदविभोर हो गया। वहाँ का रम्य वातावरण एवं मित्रों के साथ घूमते-घूमते तीन दिन कैसे बीत गए, इस बात का मुझे पता ही नहीं चला।

जैसे ही छुट्टियाँ शुरू हो जाएगी; वैसे ही तुम मेरे घर पर आना। फिर हम मिलकर खूब खेलेंगे। तुम्हारे माता जी एवं पिता जी को मेरा सादर प्रणाम।

तुम्हारा प्रिय मित्र,

विजय मेहता

पता : २०१, गीता महल,

कृष्ण नगर,

मुंबई : ४०० ०१२

ई-मेल आईडी : vijay-44@gmail.com

उ.4 **(आ)**

(i) **मुद्दों के आधार पर कहानी लेखन कीजिए।** **4**

कुसंगति का फल

एक जंगल था। उस जंगल में तरह-तरह के पक्षी एवं जानवर रहते थे। उस जंगल में एक बरगद के पेड़ पर एक हंस व एक कौआ भी रहते थे। दोनों में गहरी मित्रता थी। एक दिन वे दोनों खुले आसमान में विचरण कर रहे थे। उस वक्त कौए की नजर सिर पर दधिपात्र लेकर जाने वाले एक ग्वाले पर गई। दधिपात्र देखकर कौए के मुँह में पानी भर आया। उसने तपाक से हंस से कहा, ''क्यों न हम दोनों मिलकर दधिपात्र से थोड़ा-थोड़ा दही खा लें।'' हंस ने कहा, ''नहीं भाई ! इस प्रकार चोरी या छिपकर खाने से आफत आ सकती है; हम पकड़े जा सकते हैं। फिर भी कौए ने हंस की एक न सुनी। वह जबरन हंस को घसीटकर दधिपात्र के पास ले आया। वह बड़े मजे से दही को खाने लगा। ढेर सारा दही देखकर वह अपनी चोंच नचा-नचाकर दही खाने लगा। हंस सिर्फ उसके साथ था, लेकिन उसने दही को छुआ तक नहीं। दधिपात्र लेकर जाने वाले ग्वाले को एहसास हुआ कि दधिपात्र में से कौआ या अन्य पक्षी दही खाने की चेष्टा कर रहे हैं। ग्वाले ने आव देखा न ताव तुरंत अपना दाहिना हाथ ऊपर कर उसने हंस को पकड़ लिया। तब तक आहट पाकर कौआ वहाँ से उड़ गया। बेचारा हंस! उसका बुरा हाल हुआ। ग्वाले ने उसे मार डाला।

सीख : बुरे लोगों के साथ रहने से बुरा होता है। इसलिए हमें अच्छे लोगों के साथ रहना चाहिए।

अथवा

(ii) (I) अशांति का मूल कारण क्या है?

(II) भय के वशीभूत मानव की स्थिति कैसी है?

(III) मानव आणविक और आत्मिक दोनों शक्तियों का मिलन कैसे कराएगा?

(IV) शांतिमय दुनिया कैसे प्रत्यक्ष होगी?

उ. 5 **(अ) विज्ञापन लेखन :** **4**

खुश खबर! खुश खबर! खुश खबर!

क्रीड़ा प्रतियोगिता का आयोजन

दिनांक : २२ जुलाई, २०१८ से २४ जुलाई, २०१८

समय : सुबह ठीक ९:०० से ४:०० तक

स्थल : पराग विद्यालय क्रीड़ागण

खेल प्रतियोगिता

फुटबॉल	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
क्रिकेट	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
हॉकी	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
बैडमिंटन	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
खो-खो	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
टेबल टेनिस	: सीनियर व जूनियर ग्रुप
कैरम बोर्ड	: सीनियर व जूनियर ग्रुप

सीनियर ग्रुप : उम्र : १४ से १६ तक

जूनियर ग्रुप : उम्र : ११ से १३ तक

संपर्क :
क्रीड़ा अध्यापक
(महेश गावडे)
पराग विद्यालय

उ.5 (i) **(आ) निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर ६० से ८० शब्द में निबंध लिखिए ।** **6**

'मैं पंछी बोल रहा हूँ...'

''मैं हूँ एक पंछी... प्रकृति का एक अंश...। इस धरती पर चारों ओर स्वच्छंद विचरण करने का अधिकार ईश्वर ने मुझे भी प्रदान किया है। अब तो बूढ़ा हो गया हूँ।

मुझे आज भी याद है, मेरा जन्म आम के पेड़ पर बने घोंसले में हुआ था। जब मेरा जन्म हुआ था; तब मेरे माता-पिता बहुत खुश थे। मेरे साथ मेरे और दो भाई भी थे, लेकिन अब वे जीवित नहीं है। वे काल के गाल में समा गए हैं। आहिस्ता-आहिस्ता मैं बड़ा हुआ। बड़ा होने के बाद मेरे पंखों में शक्ति आ गई और मैं स्वच्छंद होकर खुले आसमान में उड़ने लगा। समुद्र के ऊपरी हिस्से पर उड़ते समय मुझे बहुत खुशी होती थी। समुद्र से ऊपर उड़ने वाली लहरों के साथ मैं भी नर्तन करता था। कितना अच्छा लगता था मुझे उस समय! मैंने अन्य पक्षियों के साथ आम के पेड़ पर अपना घोंसला बनाया व बड़े ही प्यार से वहाँ पर रहने लगा। पेड़ की सुखद हरियाली में मुझे बेहद मजा आता था। अन्य पक्षियों के साथ मौज-मस्ती करते समय मैं फूला न समाता था। मेरी यह खुशी अधिक दिन तक नहीं रही। भाग्य को कुछ और ही मंजूर था। एक दिन सरकारी अधिकारी आम के पेड़ के पास छान-बीन करने आए। न जाने उनकी आपस में क्या बातें हुईं ? उनके चले जाने के चार-पाँच दिन के बाद आम के पेड़ की कटाई करने के लिए कर्मचारी आए। उन्होंने बड़ी ही निर्दयता से पेड़ को जड़ से अलग कर दिया। इस कारण आम के पेड़ पर रहने वाले मेरे जैसे कई पक्षी बेघर हो गए। हम सब पंछी निराश एवं दुखी हो गए। कई पक्षियों ने घोंसले में शिशुओं को जन्म दिया था। पेड़ के गिरने के साथ उन्होंने भी इस संसार से विदा लिया। अपने दोस्त एवं परिजनों की बुरी अवस्था देखकर मैं भी व्यथित हो गया हूँ।

अब मैं अपने जीवन की अंतिम साँसें गिन रहा हूँ। मेरे जैसे कई खग-वृंद काल के गाल में समा गए हैं। हमारी कई प्रजातियाँ नामशेष रह गई हैं। इंसान को प्रकृति के साथ खिलवाड़ नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा ही होता रहा, तो एक दिन पर्यावरण संतुलन बिगड़ जाएगा और समस्त जीवन खतरे में पड़ जाएगा। इसलिए पर्यावरण की रक्षा करना प्रत्येक मानव का कर्तव्य होना चाहिए। यही मेरा सबके लिए संदेश है।''

अथवा

(ii) **मेरी अभिलाषा** 6

''हौसलों की उड़ान लेकर आओ, आज उड़ते हैं,
उम्मीदों के पंख लगाकर ऊँचाईयों से जुड़ते हैं''

हर व्यक्ति अपनी अभिलाषा पूर्ण करने के लिए इसी तरह हौसलों की उड़ान लेकर ऊँचाईयों को छूने का प्रयास करता है। सभी व्यक्ति समान नहीं होते; अत: उनकी अभिलाषाएँ भी भिन्न-भिन्न होती हैं। मेरी अपनी अभिलाषा है कि मैं एक डॉक्टर बनूँ।

मैं केवल धन कमाने के लिए डॉक्टर नहीं बनना चाहता। मैं धन को विशेष महत्त्व नहीं देता। मैं मानव-सेवा को सबसे महत्त्वपूर्ण समझता हूँ। एक डॉक्टर की हैसियत से मैं मानव सेवा के अनेक अवसर पा सकूँगा। इसलिए मेरी उत्कट इच्छा है कि एक आदर्श डॉक्टर बनकर समाज-सेवा करूँ और अपना जीवन सार्थक बनाऊँ।

किसी भी महत्त्वाकांक्षा को साकार करने के लिए भरसक प्रयत्न करने पड़ते हैं। मैं अभी से अध्ययन में अधिक परिश्रम करने लगा हूँ। उन विषयों पर विशेष ध्यान दे रहा हूँ; जो मेरे डॉक्टर बनने में सहायक हो सकते हैं। मैं अपन गुरुजनों तथा परिचित चिकित्सकों से परामर्श करने के बाद इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि किसी भी पद्धति से रोगोपचार की क्षमता प्राप्त कर मानव-सेवा की जा सकती है। आज देश की अधिकांश जनता सही चिकित्सा से वंचित है।

वर्तमान में एलोपैथी चिकित्सा-पद्धति का बोलबाला है, फिर भी मैं आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक चिकित्सा-पद्धति को अधिक उपयोगी समझता हूँ। यदि मैंने एलोपैथी में डिग्रियाँ प्राप्त कर लीं, तो भी मैं आयुर्वेद और होमियोपैथी का विस्तृत ज्ञान अवश्य प्राप्त करूँगा। मैं अपने मन में एलोपैथी को मुख्य नहीं, गौण मानकर चलूँगा। मैंने रोगियों पर आयुर्वेदिक और होमियोपैथिक दवाओं का चमत्कारिक प्रभाव देखा है। इसके अतिरिक्त ये दवाएँ अपेक्षाकृत सस्ती भी होती हैं और इनका रोगियों पर दुष्प्रभाव भी नहीं पड़ता।

अब मैंने दृढ़ संकल्प कर लिया है कि अपनी डॉक्टर बनने की अभिलाषा साकार करूँगा। मुझे विश्वास है कि अपना संकल्प पूर्ण करने में मुझे अपने माता-पिता से भरपूर सहायता और गुरुजनों से आशीर्वाद प्राप्त होता रहेगा।

❖❖❖